'हंसो और हंसाओ' सीरीज़

क्या खूब चुटकुले

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

क्या खूब

चुटकुले

हरीश यादव

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

प्रकाशक

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

F-2/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
☎ 23240026, 23240027 • *फैक्स:* 011-23240028
E-mail: info@vspublishers.com • *Website:* www.vspublishers.com

शाखाः हैदराबाद
5-1-707/1, ब्रिज भवन (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया लेन के पास)
बैंक स्ट्रीट, कोटी, हैदराबाद - 500 095
☎ 040-24737290
E-mail: vspublishershyd@gmail.com

शाखा : मुम्बई
जयवंत इंडस्ट्रिअल इस्टेट, 1st फ्लोर - 108,
तारदेव रोड अपोजिट सोबो सेन्ट्रल मॉल, मुम्बई - 400 043
☎ 022-23510736
E-mail: vspublishersmum@gmail.com

फ़ॉलो करें:

© **कॉपीराइटः** वी एण्ड एस पब्लिशर्स

ISBN 978-93-521511-0-3

DISCLAIMER

इस पुस्तक में सटीक समय पर जानकारी उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास किया गया है। पुस्तक में संभावित त्रुटियों के लिए लेखक और प्रकाशक किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होंगे। पुस्तक में प्रदान की गयी पाठ्य सामग्रियों की व्यापकता या सम्पूर्णता के लिए लेखक या प्रकाशक किसी प्रकार की वारंटी नहीं देते हैं।
पुस्तक में प्रदान की गयी सभी सामग्रियों को व्यावसायिक मार्गदर्शन के तहत सरल बनाया गया है। किसी भी प्रकार के उद्धरण या अतिरिक्त जानकारी के स्रोत के रूप में किसी संगठन या वेबसाइट के उल्लेखों का लेखक या प्रकाशक समर्थन नहीं करता है। यह भी संभव है कि पुस्तक के प्रकाशन के दौरान उद्धृत बेवसाइट हटा दी गयी हो।
इस पुस्तक में उल्लिखित विशेषज्ञ के राय का उपयोग करने का परिणाम लेखक और प्रकाशक के नियंत्रण से हटकर पाठक की परिस्थितियों और कारकों पर पूरी तरह निर्भर करेगा।
पुस्तक में दिये गये विचारों को आजमाने से पूर्व किसी विशेषज्ञ से सलाह लेना आवश्यक है। पाठक पुस्तक को पढ़ने से उत्पन्न कारकों के लिए पाठक स्वयं पूर्ण रूप से जिम्मेदार समझा जायेगा। उचित मार्गदर्शन के लिए पुस्तक को माता-पिता एवं अभिभावक की निगरानी में पढ़ने की सलाह दी जाती है। इस पुस्तक के खरीददार स्वयं इसमें दिये गये सामग्रियों और जानकारी के उपयोग के लिए सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं। इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री का कॉपीराइट लेखक/प्रकाशक के पास रहेगा। कवर डिजाइन, टेक्स्ट या चित्रों का किसी भी प्रकार का उल्लंघन किसी इकाई द्वारा किसी भी रूप में कानूनी कार्रवाई को आमंत्रित करेगा और इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार समझा जायेगा।

भूमिका

चुटकुलों की पुस्तक पर क्या भूमिका बांधू? पुस्तक का पहला पन्ना पढ़िए, अगर आपके चेहरे पर मुस्कान उभरी तो मैं समझूंगा पुस्तक ने अपनी भूमिका या यूं कहें अपना परिचय स्वयं दे दिया। लेकिन चुटकुले पढ़ने का आजकल वक्त किसे है? यह ठीक भी है, लेकिन जीवन में अनेक क्षण ऐसे आते हैं जो काटे नहीं कटते। जैसे रेल या बस का सफर। उस वक्त चुटकुलों की पुस्तक-सा हमसफर आपको जरूर भायेगा। यही नहीं, रोजमर्रा की उबाऊ जिन्दगी में बोझल क्षण ज्यादा हैं, और हलके-फुलके क्षण कम और यह और भी बोझल बन जाते हैं जब दिन-भर की परेशानियां रात की नींद भगा डालती हैं। ऐसे समय में इन गुदगुदाने वाले कुछ-एक चुटकुलों का मनन आपके दिमाग की चिंताओं को धुएं की तरह उड़ा देगा।

चुटकुले व्यक्ति के उन क्षणों की यादें हैं जब वह बेवकूफियां करता है, जाने में और अनजाने में भी। यह बेवकूफियां सभी करते हैं, तभी तो चुटकुलों का भंडार बढ़ता जाता है। *हंसो और हंसाओ सीरीज़* की यह तीन पुस्तकें **आओ हँस लें, क्या खूब चुटकुले** और **सुपर-हिट जोक्स्** इसी भंडार में से छंटी हुई, चुनी हुई कृतियों का संकलन हैं जो पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका, डॉक्टर-मरीज, सखी-सहेली, मकानदार-किरायेदार... सभी तरह के संबंधों के एक खास पहलू—व्यंग्यात्मक पक्ष को प्रस्तुत करता है। साथ में सटीक व्यंग्य-चित्र चुटकुलों में समाहित हास्य-व्यंग्य को द्विगुणित करते हैं। इनका रसास्वादन आप हर जगह—अकेले में, मित्रों के बीच, पत्नी के साथ या फिर पार्टी में कर पायेंगे, इसी आशा के साथ यह पुस्तक आपको समर्पित है।

—लेखक

प्रकृति द्वारा बनाए
लाखों-करोड़ों प्राणियों में
मानव ही एकमात्र
ऐसा जीव है
जो हँस सकता है।
हँसने से स्नायु और शिराएं
दोनों ही तनाव-मुक्त हो जाती हैं,
हृदय की गति बढ़ती है,
त्वचा में स्फुरण होने लगता है
और रक्तचाप ठीक रहता है।

–प्रो. नॉर्मन कजिन्स

आशा बड़ी परेशान थी। उसने फोन करके पास के टैक्सी-स्टैन्ड से टैक्सी बुलाई। टैक्सी आने पर उसने पीछे का द्वार खोलकर बच्चों को बिठा दिया और स्वयं कुछ देर में आने को कहकर अन्दर चली गई।

ड्राइवर इन्तजार करते-करते परेशान हो गया। बच्चे टैक्सी में बैठकर खुश थे और चटर-पटर कर रहे थे।

आखिर पैंतीस मिनट बाद आशा बाहर आई और बच्चों को गाड़ी में से उतार कर ड्राइवर से बोली-' हां, तुम्हारे कितने पैसे हुए?'

' पर आपको तो कहीं जाना था?' ड्राइवर ने अचरज से कहा।

' भई, तुम समझे नहीं', आशा ने कहा। ' मुझे धोबी का हिसाब लगाना था और फोन पर अपनी सहेली से बहुत जरूरी बातें करनी थीं। मेरे बच्चे कुछ काम नहीं करने दे रहे थे, इसीलिए तुम्हें बुलाया था।'

★ ○ ★

मरते हुए पुरुष ने अपनी पत्नी को अपनी ओर बुलाया। वह धीरे-धीरे बोला-' सरला, मेरे मरने पर दुकान रामलाल को सुपुर्द कर देना।'

' रामलाल! उससे अच्छा तो छोटा सोहन दुकान चलायेगा।'

मृतप्राय व्यक्ति ने बात मान ली।' अच्छा, अच्छा। मोहनलाल को मेरी कार दे देना।'

पत्नी ने फिर सलाह दी-' पर मेरे ख्याल में कार शारदा के पति को चाहिए, जिसे रोजाना सात मील दूर काम पर जाना पड़ता है।'

'चलो, शारदा को ही दे दो, लेकिन मेरा यह मकान कृष्ण को दे देना।'

'कृष्ण को यह शहर पसन्द नहीं। मेरे विचार में...'

पुरुष से अब नहीं रहा गया। वह कराहा, 'सोहन की मां, एक बात बताओ। मर कौन रहा है–मैं या तुम?'

★ ○ ★

दो व्यापारी कश्मीर में छुट्टी मनाते हुए मिले। एक ने कहा–'मैं यहां बीमा कम्पनी के रुपयों पर मौज उड़ा रहा हूं। मुझे आग लगने के फलस्वरूप बीस हजार रुपये बीमे के मिले थे।'

'मैं भी', दूसरा व्यापारी मुस्कराया, 'मुझे बाढ़ में नुकसान के कारण 50,000 रुपये मिले।'

पहले आदमी ने अपना सिर खुजाया और बड़े सोच-विचार में बोला–'यार, यह बताओ कि बाढ़ कैसे शुरू की जाती है?'

★ ○ ★

सेठ दुनीचन्द टेलीफोन की ओर टकटकी लगाए बैठे थे। पिछले दिनों उन्होंने काफी खरीद कर ली थी। भाव चढ़ने की पूरी सम्भावना थी।

तभी टेलीफोन की घण्टी टनटना उठी और उन्होंने रिसीवर कान से लगा लिया।

घर से घबराया नौकर बोल रहा था–'साहब जल्दी कीजिए, बहूजी गिर गई हैं।'

सेठजी हड़बड़ाकर बोले–'फौरन बेच दो।'

हमारे एक मित्र ने अपने कम्पाउण्ड में बाग के लिए मिट्टी डलवाई। उसका बिल चुकाते समय वह बोले–'इस महानगर में और चाहे जो चीज मिट्टी के मोल मिलती हो, मिट्टी उस भाव नहीं बिकती।'

★ ○ ★

मां–'तुम्हारा काम ऑफिस में कैसा चल रहा है?'

बेटा–'मेरे नीचे 25 आदमी काम करते हैं।'

मां–'तो क्या तुम अभी से अफसर हो गए?'

बेटा–'मैं ऊपर की मंजिल में काम करता हूं।'

★ ○ ★

'आपकी हॉबी क्या है?'

'घुड़सवारी।'

'पिछली बार कब घोड़े पर बैठे थे?'

'करीब चार वर्ष पहले अपनी शादी के अवसर पर।'

★ ○ ★

प्रेमी–'तो तय रहा कि आज रात को दो बजे हम शहर छोड़कर भाग जाएंगे।'

प्रेमिका–'हां।'

प्रेमी–'तुम उस समय बिलकुल तैयार रहना।'

प्रेमिका–'तुम चिन्ता न करो। मेरे पति मेरा सामान बांध रहे हैं।'

'हलो उदय!' रमा बोली।

'उदय? पर मैं तो राजीव हूं।'

'ओह! आइ एम सॉरी। मैंने समझा आज बुधवार है।'

★ ○ ★

'आलू क्या भाव दिए?'

'छः रुपये किलो।'

'लेकिन सामने वाला दुकानदार तो चार रुपये किलो बेच रहा है।'

'तो वहीं से ले लीजिए।'

'उसके पास अभी हैं नहीं?'

'अजी साहब, जब मेरे पास नहीं होते, तो मैं दो रुपये किलो बेचा करता हूं।'

★ ○ ★

विनोद की आदत थी कि काम से लौटने पर कपड़े बदल कर वह अपने छोटे से बाग में जुट जाता था। कभी खुरपा चलाता था, कभी पानी देता था।

एक दिन एक नारी ने सड़क पर कार रोककर उसे पुकारा।–'ऐ, सुनना जरा। तुम्हें यहा क्या मिलता होगा? तुम मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें यहां से ज्यादा दूंगी।'

विनोद ने हाथ चलाते हुए हांक लगाई–'आप नहीं दे सकेंगी। इस घर की मालकिन मुझे अपने साथ सोने देती है।'

★ ○ ★

वकील साहब भूली-बिसरी बातें याद करते हुए बोले-'जब मैं छोटा था, तब मेरी इच्छा थी कि मैं एक डाकू बनूं।'

'बधाई हो वकील साहब! आपकी इच्छा पूरी हुई।' मुवक्किल बोला।

★ ❍ ★

पागलखाने में नया आदमी भरती हुआ था, लेकिन जहां सब रोते-झींकते आते थे, वहां वह हँस रहा था, खिलखिला रहा था। आखिर डॉक्टर ने उससे कारण पूछा।

'यह सब मेरे जुड़वां भाई के कारण है।'

'क्या मतलब?'

'हम दोनों बिलकुल एक-से थे। हमें कोई नहीं पहचान सकता था। क्लास में शैतानी वह करता था, पिटाई मेरी हो जाती थी। मोटर तेजी से वह चलाता था, पुलिस जुर्माना मुझ पर कर देती थी। मेरी प्रेमिका थी, भाग गई उसके साथ।'

'अच्छा।'

'पर अंत में बदला मैंने ले लिया। मैं मर गया था, पर उसे दफना दिया गया।'

★ ❍ ★

अदालत में जिरह के दौरान वकील ने एक महिला गवाह से कहा-'तुम्हारा कहना है कि तुम पढ़ी-लिखी नहीं हो, लेकिन तुमने मेरे सवालों के जवाब बड़ी अक्लमंदी से दिए हैं।'

महिला गवाह ने बड़ी नम्रतापूर्वक कहा-'ऊल-जलूल

और बेवकूफी से भरे प्रश्नों के उत्तर देने के लिए पढ़ना-लिखना जरूरी नहीं है।'

★ ○ ★

तीन कछुओं ने कॉफी पीने की ठानी। जैसे ही वे एक होटल में घुसे कि बूंदा-बांदी होने लगी। इस पर बड़े कछुए ने छोटे से कहा-'जाओ, घर जाकर छतरी ले आओ।'

छोटा बोला-'छतरी लेने तो मैं चला जाऊंगा, बशर्ते कि आप दोनों मेरे पीछे कॉफी न पी जाएं।'

'नहीं, हम तुम्हारी कॉफी नहीं पिएंगे, तुम इत्मीनान से जाओ।' बड़े और मंझले ने आश्वासन दिया।

जब दो घंटे बीत गए तो बड़ा कछुआ मंझले से बोला-'लगता है, अब छोटा नहीं लौटेगा। मैं समझता हूं, अब हम दोनों उसके हिस्से की कॉफी पी डालें।'

बड़े ने अपनी बात खत्म की ही थी कि दरवाजे के बाहर से छोटे की आवाज आई-'तुम मेरी कॉफी पी जाओगे, तो मैं छतरी लेने नहीं जाऊंगा। देख लेना।'

★ ○ ★

पत्नी ने बड़े गर्व से पति से कहा-'यह घर मेरे पिता की बदौलत है,ये फर्नीचर, ये कपड़े, ये गहने, ये बर्तन सब उनके दिए हुए हैं। तुम्हारा है ही क्या यहां?'

रात को घर में चोर घुसे। पत्नी ने पति को जगाया।

पति यह कहकर-'मेरा इस घर में है ही क्या?' करवट बदल कर सो गया।

जाड़ों के दिन थे। बड़े जोर का कुहरा पड़ रहा था। हाथ को हाथ सुझाई नहीं पड़ता था। ऐसे में एक सज्जन अपनी कार में कहीं जा रहे थे। कुहरे की वजह से आगे कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था। वह बड़े परेशान हुए। तभी उन्हें अपनी कार के आगे किसी दूसरी कार की लाल बत्ती दिखाई दी। उन्होंने तुरन्त अपनी कार को उसके पीछे कर लिया। काफी देर वह मजे में उसके पीछे चलते रहे। अचानक अगली कार एकदम रुक गई। बचाने की कोशिश करते-करते भी उनकी कार अगली कार से टकरा गई।

वह सज्जन कार से बाहर निकलकर चिल्लाए-'आपको कार चलाने की तमीज भी है? बिना साइड दिए बीच सड़क कार रोक दी।'

'सड़क! अरे, साहब, यह तो मेरा मोटर गैरेज है।' अगली कार में से आवाज आई।

★ ○ ★

मकान मालिक-'पिछले पांच महीनों का बकाया किराया आप कब दे रहे हैं?'

लेखक-'प्रकाशक का चेक आते ही अदा कर दूंगा।'

मकान मालिक-'चेक कब आने वाला है।'

लेखक-'बस, प्रेरणा होने भर की देर है, प्रेरणा होते ही मैंने उपन्यास लिखा, प्रकाशक को भेजा, उसने प्रकाशित करना स्वीकार किया और चेक आया।'

★ ○ ★

आपने सुरभि से शादी कब की?' एक परिचित ने पूछा।

उसके पति ने क्रोधित होकर कहा-'101 चेकबुक पहले।'

'क्या तुम सिगरेट पीते हो?'

'नहीं।'

'क्या तुम्हें शराब का शौक है?'

'नहीं।'

'क्या लड़कियों का?'

'नहीं।'

'फिर तुम किस चीज से अपना दिल बहलाते हो?'

'झूठ बोलकर।'

★ ❍ ★

कॉलेज की पार्टी में एक प्रसिद्ध साहित्यिक से मिलने पर एक छात्र गर्व से बोला–'मैं प्रसिद्ध से प्रसिद्ध साहित्यिक की रचना भी तभी पढ़ता हूं, जब मैं उससे पहले मिलकर सन्तुष्ट हो लेता हूं।'

'अच्छा! तो आपने महर्षि वाल्मीकि से किस प्रकार भेंट की?' साहित्यिक ने पूछ लिया।

★ ❍ ★

एक लड़ाकू लेखक ने कुछ दिन पहले एक प्रकाशक के पास अपनी पुस्तक की एक पांडुलिपि जमा की थी। उसी के विषय में चर्चा चल रही थी। 'मानता हूं, आपने बहुत अच्छी चीज लिखी है', प्रकाशक ने कहा–'लेकिन हमारी फर्म केवल बहुत प्रसिद्ध नामों की ही पुस्तकें छापती है।'

'ओह, खूब! बहुत खूब!' लेखक खुशी के मारे चिल्ला उठा–'मेरा नाम प्रेमचन्द है।'

★ ❍ ★

बच्चे-(एक बूढ़े को चिढ़ाते हुए) 'ताऊ रे ताऊ, तेरे सिर पर घास।'

बूढ़ा-'ओह, तभी गधे मेरे पीछे पड़े हुए हैं।'

★ ○ ★

'मुझे विश्वास है कि मेरे बेटे की आदतों पर पूरा ध्यान दिया जा रहा है।' 'एक मां ने प्रधानाध्यापिका को लिखा।

उसके पास उत्तर आया-'आपके बेटे के पास आदतें नहीं हैं, रिवाज हैं। फिर भी हम अपनी ओर से पूरा प्रयत्न कर रहे हैं।'

★ ○ ★

'बेटा, तुम रो क्यों रहे हो?' अध्यापिका ने पूछा।

'पिताजी ने मुझे वर्ग पहेली भरने पर मारा।'

'लेकिन क्यों? इससे तो बच्चों का दिमाग तेज होता है।'

'उसमें दो अक्षरों का एक शब्द था, जिसका इशारा दिया था कि वह गुस्से में पागल होता है। वहां मैंने 'पिता' भर दिया था।'

★ ○ ★

'क्या उन दोनों में पहली दृष्टि का प्रेम है?'

'नहीं, दूसरी दृष्टि का। पहली मुलाकात में अमर नहीं जानता था कि सुलेखा इतनी धनी है।'

★ ○ ★

हेमन्त अग्रवाल घूमने वाला सेल्समैन था। उस दिन कड़ाके की धूप में वह दिल्ली के स्टेशन पर उतरा और दस-पन्द्रह दुकानों पर जाने में ही थक कर चूर हो गया। अच्छे ऑर्डर न मिलने पर उस का साहस नहीं बंधा। एकाएक एक नाई का एयर कन्डीशन्ड हेयर कटिंग सैलून देखकर उसकी जान में जान आई। सोचा-चलो, दाढ़ी भी बन जाएगी और कुछ देर बदन में ठंडक भी पड़ेगी।

अग्रवाल झपाक से अन्दर घुसा और पास की कुर्सी पर लुढ़कते हुए उसने नाई को शेव बनाने का ऑर्डर दिया।

नाई ने पास आकर कहा-'सर, जरा ऊंचे होकर बैठ जाएं। दाढ़ी नीची पड़ती है।'

अग्रवाल कुर्सी पर वैसे ही निढाल पड़ा रहा। बोला, 'कोई बात नहीं। हमारे सिर के बाल काट दो।'

★ ○ ★

पत्नी (वकील पति से)-'तुम इतने सालों से वकालत कर रहे हो। मुझे यह बताओ कि उम्र कैद से बड़ी सजा क्या होती है?'

वकील पति-'वही तो काट रहा हूं।'

★ ○ ★

'जब से जैक से मेरी मुलाकात हुई है वह हर रात मेरे घर ही बिताता है। पता नहीं क्या कारण है?' रीता ने सहेली को चिढ़ाने के लिए कहा।

'मुझे पता है। उसके पास टी.वी. नहीं है।'